दादा भगवान परिवार का

फ़रवरी - २०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

सारा दिन मम्मी का यह डायलॉग कि 'पढ़ने बैठ-पढ़ने बैठ' आप में से किसने नहीं सुना होगा?! मैंने भी बहुत सुना है। आप सभी को लगता होगा न कि पढ़ना नहीं होता तो कितना मज़ा आता? सारा दिन बस खेलते ही रहो।

लेकिन हमारे मम्मी-पापा, हमारी भलाई के लिए ही पढने के लिए कहते हैं। वह समझ में नहीं आता है इसलिए गुस्सा आता है।

तो आओ, इस अंक में हम वह समझते हैं कि पढ़ना क्यों ज़रूरी है और अच्छी तरह पढ़कर जीवन में उन्नति करें।

-डिम्पल मेहता

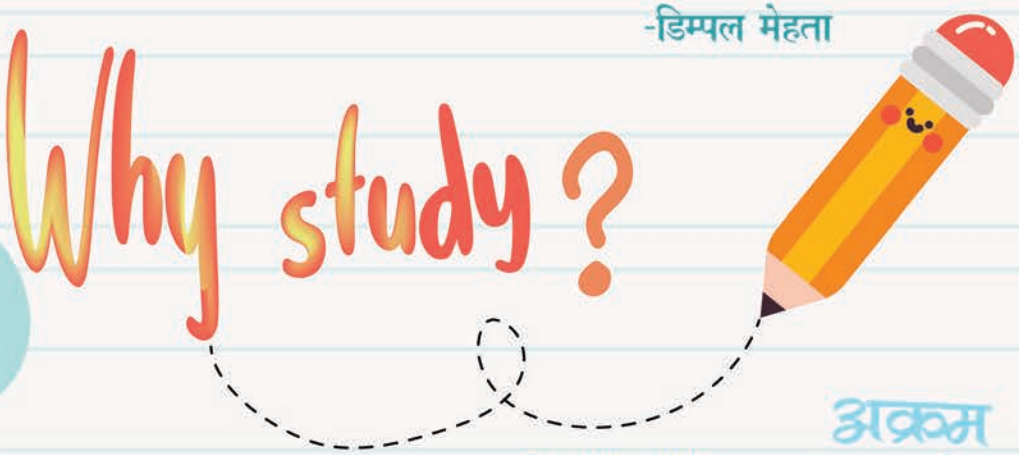

अक्रम एक्सप्रेस

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ८ अंक : १०
अखंड क्रमांक : ९५
फरवरी - २०२१

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

पढ़ाई करना बहुत ज़रूरी है। पढ़ाई करने से अंदर एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है, सॉल्यूशन लाने की शक्ति बढ़ती है, टीचर का विनय रखने की शक्ति बढ़ती है, फ्रेन्ड के साथ डीलिंग करने की शक्ति बढ़ती है, कितनी सारी शक्ति बढ़ जाती है इंसान की!

प्रश्नकर्ता : मेरा मन पढ़ने में नहीं लगता हो और सिर्फ खेलने में ही मज़ा आता हो तो मुझे क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : खेलने में कितना मज़ा आता है! और फिर जोड़ों में दर्द होता है और रात को थककर सो जाना पड़ता हैं। पढ़ेंगे तो करियर बनेगा और भविष्य में हमें अच्छी पोस्ट भी मिल सकती है, जीवन में व्यवसाय कर सकेंगे। उसमें मज़ा है या फिर सिर्फ मजदूरी करनी पड़े, नौकरी का ठिकाना न हो, उसे अच्छा कहेंगे?

इसलिए यह तो भविष्य के बारे में सोच कर पढ़ने की बात है। जीवन शांति से बीते उसके जैसा मज़ा ही नहीं है न! यदि मज़ा करने के लिए ही तुझे खेलना है तो मज़ा करने के लिए ही पढ़ना भी है। ज़िंदगी भर फिर कितना मज़ा आएगा! अच्छे पैसे हों, अच्छा घर हो, अच्छा व्यवसाय हो तो हमें मज़ा ही आएगा न!

पढ़ाई करनी ही चाहिए। पढ़ाई करने से मनुष्य काबिल बनता है। यदि काबिलियत नहीं हो तो वह फूहड़, निकम्मा रह जाता है। अभी पढ़ाई करने का टाइम है, तो पढ़ लो।

अब तू मन लगाकर पढ़ेगा न? और फिर भी तेरा मन किचकिच करे तो मन की परवाह नहीं करनी है। कहना कि मुझे ठीक से पढ़ने दे। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' ज़ोर से कान को सुनाई दे इस तरह बोलना है। आँखें बंद करके, खूब शक्तियाँ माँगनी हैं, फिर पढ़ना है।

जिसमें हमें इंट्रेस्ट होता है वह सब याद रहता है। जिसमें इंट्रेस्ट कम होता है उसमें ऐसा लगता है कि याद रहता ही नहीं है।

उदा: हमें खेल-कूद, कम्प्यूटर, टी.वी में इंट्रेस्ट है तो वह सब याद रहता है। पढ़ने में इंट्रेस्ट कम है इसलिए याद नहीं रहता है।

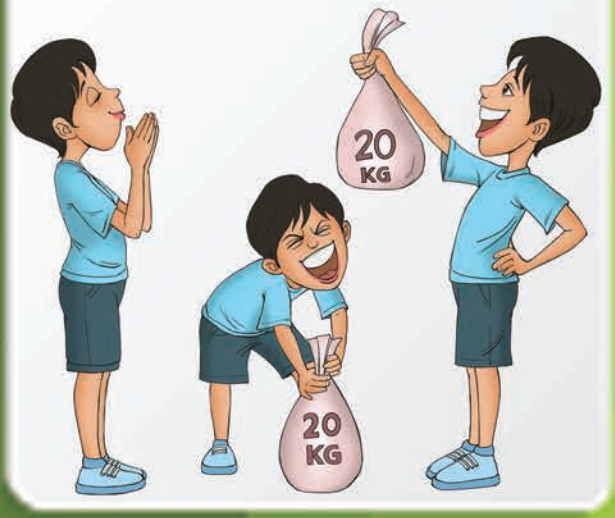

यह

वो

यदि पढ़ने के लिए शक्ति माँगोगे तो आपके अंदर से ही भगवान की शक्ति प्रकट होगी। उदा: जैसे, बीस किलो वजन उठाने की शक्ति नहीं हो और पचास किलो उठाने की शक्ति मिल जाए तो बीस किलो तो हँसते-खेलते उठा सकते हैं। वैसे ही भगवान से शक्ति माँगोगे तो बोझ हल्का हो जाएगा।

पढ़ने में इंट्रेस्ट लाने के लिए उसकी महत्वता समझनी चाहिए कि पढ़ाई हमें जिंदगी में काम आएगी और तभी हम आगे बढ़ेंगे।

नई ही बात है!

हम ऐसी भावना कर सकते हैं कि अच्छी तरह पढ़कर हम भविष्य में दादा के जगत् कल्याण के प्रोजेक्ट में सेवा देंगे।

ऑल राउन्डर

ज़ोया के मन में एक ही सीन बार-बार रिप्ले हो रहा था। वह करीब आठ बार वीर को फोन लगा चुकी थी। लेकिन वीर फोन उठा ही नहीं रहा था। थककर ज़ोया ने फोन पलंग पर पटक दिया और हाथ में सर्टिफिकेट लेकर बैठ गई। उसके चेहरे पर खुशी छाई हुई थी। तभी फोन की रिंग बजी।

"वीर भाई, कितने फोन लगाए आपको!" हलो-वलो किए बिना ही ज़ोया बेसब्री से बोली।

"अरे ज़ो.. मैं बास्केटबॉल की प्रैक्टिस में था। बोल क्या कहना है?" वीर ने शांति से पूछा।

सर्टिफिकेट हाथ में लेकर ज़ोया ने कहा, "भाई, मैंने कर दिखाया।"

वीर कन्फ्यूज़ हो गया, "अरे, लेकिन क्या? कुछ बता तो सही!"

"भाई, आई वन द अवॉर्ड। आप बैंगलोर सिटी की बेस्ट साई-फ़ाई (साइंस फ़िक्शन) राइटर के साथ बात कर रहे हो।" ज़ोया के आवाज़ में गर्व था।

"नो वे, ज़ोज़ो" वीर ज़ोया से भी ज्यादा एक्साइट हो गया, "तूने सचमुच कर दिखा या। आइ एम सो प्राउड ऑफ यू। तू अहमदाबाद आएगी तब हम एक बड़ी पार्टी करेंगे। एक मिनट, दादा जी को तेरे साथ बात करनी है। मैं उन्हें दे रहा हूँ।"

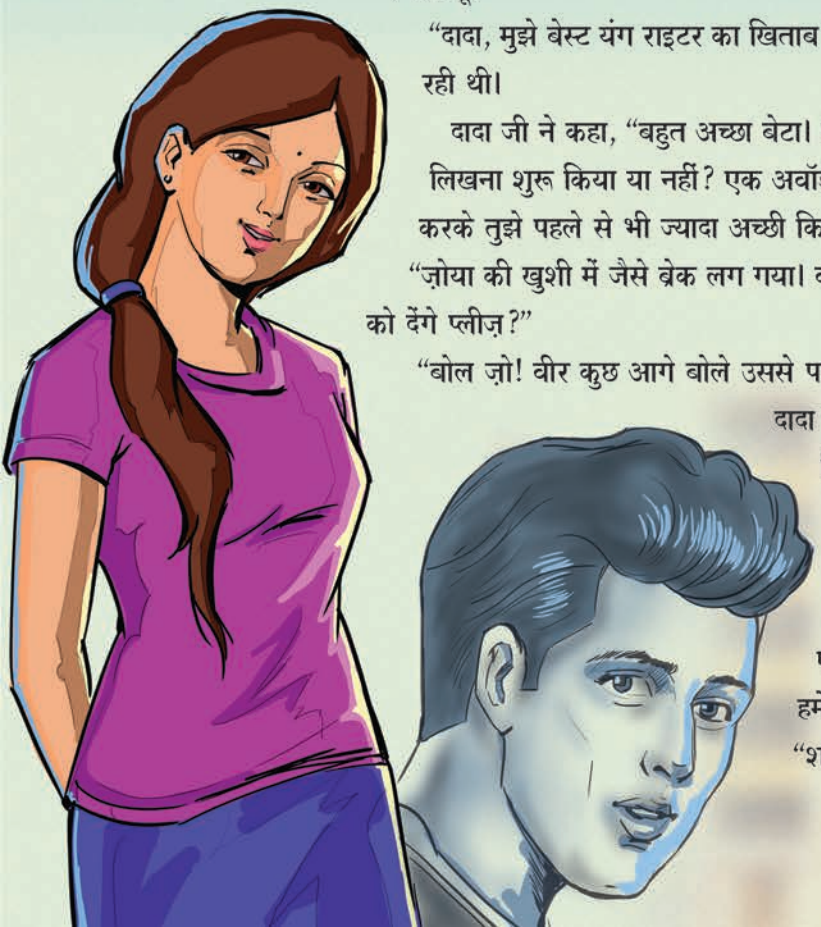

"दादा, मुझे बेस्ट यंग राइटर का खिताब मिला है।" ज़ोया फोन में ज़ोर-ज़ोर से बोल रही थी।

दादा जी ने कहा, "बहुत अच्छा बेटा। लेकिन तू यह बता कि तूने अपनी नई बुक लिखना शुरू किया या नहीं? एक अवॉर्ड से खुश मत हो जाना। अभी और मेहनत करके तुझे पहले से भी ज्यादा अच्छी किताब लिखनी है।"

"ज़ोया की खुशी में जैसे ब्रेक लग गया। वह मुश्किल से बोली, ओ.के दादा जी, भाई को देंगे प्लीज़?"

"बोल ज़ो! वीर कुछ आगे बोले उससे पहले तो ज़ोया उस पर टूट पड़ी, भाई तुमने दादा जी को फोन क्यों दिया? उन्होंने मेरा मूड़ बिगाड दिया। मेरे अवॉर्ड से खुश होने के बदले मुझे लेक्चर देने बैठ गए। पता नहीं वे कब खुश होंगे? बचपन से ही ऐसा होता आया है। उन्होंने अपने टाइम में एल.एल.बी विद इंग्लिश क्या कर लिया, हमें भी पढ़ा-पढ़ाकर पागल कर दिया।"

"शशश...ज़ो...शांत हो जा।" वीर फोन लेकर

दूसरे रूम में गया।

"दादा जी तेरी केयर करते हैं।"

"मुझे विश्वास नहीं होता कि आप उनकी साइड ले रहे हो। हमें पहले से ही पता था कि हमें डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बनना, राइट? और उन्हें भी पता था। फिर भी सभी सब्जेक्ट्स में अच्छे मार्क्स लाने के लिए कितनी मेहनत करवाते थे।" ज़ोया बहुत ही चिढ़ गई।

"ज़ो रिलैक्स...इतना ज्यादा गुस्सा!!!" वीर ने एक गहरी साँस ली।

"चल, तेरे सर्टिफिकेट में क्या लिखा है, वह मुझे पढ़कर सुना।"

ज़ोया थोड़ी शांत हुई और बोली, "टु बेस्ट यंगेस्ट साई-फ़ाई राइटर।"

"अरे, यह साई-फ़ाई राइटर यानी क्या? वीर ने पूछा।"

"कम ऑन, भाई। आपको पता है।" ज़ोया ने कहा, "साई-फ़ाई राइटर यानी जो विज्ञान की एक काल्पनिक दुनिया बनाकर उसके बारे में लिखे। इसमें टाइम ट्रैवल, दूसरे प्लैनट की लाइफ़, लाइट-स्पीड आदि बातें होती हैं। लेकिन आप ऐसा सवाल क्यों कर रहे हो?"

"क्योंकि मुझे जहाँ तक याद है, तुझे तो विज्ञान बिल्कुल भी पसंद नहीं था। तो फिर उसके बारे में तू कैसे लिख पाई?" वीर ने धीरे से पूछा।

"अरे...लेकिन मेरी विज्ञान की समझ बहुत अच्छी है...क्या आपको याद नहीं है कि दादा जी मुझे विज्ञान पढ़ने के लिए कितना फ़ोर्स करते थे?" बोलते-बोलते ज़ोया रुक गई।

"तो क्या दादा जी के कहने से तुझे कुछ फायदा नहीं हुआ है?" वीर ने हँसकर पूछा।

ज़ोया थोड़ी शरमा गई। लेकिन, वह यों ही हार मान ले ऐसी नहीं है। उसने कहा, "चलो भाई, माना कि दादा जी ने मुझसे आग्रह किया तो मुझे फायदा हुआ। लेकिन आपको? आपको तो स्पोर्ट्स में करियर बनाना था। आपको क्यों भाषा पढ़ने के लिए इतना आग्रह किया?"

"तू यह बात जाने दे। वीर ने टॉपिक चेंज किया, तू मुझे यह बता कि तुझे हमारी लास्ट मैच में मज़ा आया या नहीं।"

"भाई...कितनी अफलातून मैच थी! लास्ट में आपने जो थ्री पॉइन्ट्स लिए उसी से तो आपके टीम की जीत हुई थी। और उसके बाद आपने जो इंटरव्यू दिया था, वह तो बेस्ट था! भाई, उस दिन तो आप स्टार थे।"

"चल अब बहुत तारीफ़ मत कर।" वीर थोड़ा शरमा गया।

"नहीं भाई, मैं सही कह रही हूँ।" ज़ोया ने वीर को विश्वास दिलाया,

"इसके बाद ही तो आपको टीम का कैप्टन बनाया गया। आपकी गेम अच्छी थी इसलिए नहीं, लेकिन आपकी पर्सनालिटी, आपका बात करने का तरीका, बातचीत में छलकता हुआ आपका आत्मविश्वास..."

वीर ने ज़ोया को बीच में ही रोककर पूछा, "और यह आत्मविश्वास, यह अंग्रेजी में बात करना, यह सब मुझे किस तरह आया? तुझे यह नहीं पता ज़ो?"

ज़ोया चुप हो गई।

"यह विश्वास प्राप्त करने के पीछे दादा जी की मेहनत है। सातवीं कक्षा में जब मेरे अंग्रेजी में मार्क्स कम आए थे तब दादा जी ने मुझे अंग्रेजी पढ़ाना शुरू किया। रोज़ अंग्रेजी का एक नया शब्द सीखकर, सबके साथ अंग्रेजी में बात करने का नियम बनाया। उस समय मुझे समझ में नहीं आया था लेकिन आज पता चलता है कि ऑल राउन्डर एजुकेशन के लिए दादा जी के दबाव की वजह से ही लाइफ़ में हमें आज इतनी सक्सेस मिली है," वीर की आवाज़ में गंभीरता थी।

ज़ोया सोच में पड़ गई। बचपन में दादा जी के साथ बिताया हुआ समय उसे याद आया। घर में साथ मिलकर किए गए विज्ञान के प्रयोग, गार्डन में दादा जी का पढ़ाया समाजशास्त्र का पाठ और रात को मैथ्स के पहाड़े बोलने का टाइम आदि याद करके ज़ोया का हृदय एकदम नरम पड़ गया।

"तुझे दादा जी की कही हुई 'चाइनीज़ बैम्बू ट्री' की बात याद है?" वीर ने पूछा।

"नहीं भाई। क्या थी?" दादा जी की कही हुई बात जानने की ज़ोया को इच्छा हुई।

"वह बात मुझे बहुत इन्टरेस्टिंग लगी थी।" वीर ने बात शुरू की, "हर एक प्लांट की तरह चाइनीज़ बैम्बू को भी पानी, उपजाऊ ज़मीन, सूर्य का प्रकाश आदि की जरूरत पड़ती है। बीज बोने के बाद, पहले साल कोई उपज देखने नहीं मिलती। दूसरे साल भी ज़मीन एकदम वैसी की वैसी ही दिखती है। तीसरे साल, चौथे साल भी कुछ नहीं उगता। लेकिन पाँचवे साल जादू होता है। छोटा पौधा ज़मीन से बाहर आता है। और करीब छः हफ्ते में ही पेड़ करीब ७०, ८०, ९०...फुट जितना लम्बा हो जाता है!"

"रियली?!" ज़ोया को आश्चर्य हुआ।

"हाँ, दादा जी कहते थे कि वह छोटा सा पौधा सालों तक ज़मीन के अंदर रहकर चुपचाप छिपे रहकर अपनी जड़ों को मज़बूत करता रहता है। और फिर बहुत ही कम समय में बहुत लम्बा हो जाता है। पढ़ाई भी उस बैम्बू ट्री जैसी ही है।"

वीर कुछ पल के लिए रुका और फिर आगे बोला, "जब स्कूल में पढ़ते हैं तब सालों तक हमें अपने प्रयत्नों की वैल्यू समझ में नहीं आती है। पढ़ाई करने का कारण भी समझ में नहीं आता है। लेकिन, यदि पढ़ाई की जड़ें मज़बूत होने देते हैं तो एक समय ऐसा आता है कि हम भी बैम्बू ट्री की तरह बहुत ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं।"

"ज़ो, दादा जी को हमारे बैम्बू ट्री पर विश्वास था।"

"यू आर राइट भाई।" ज़ोया ने धीमी आवाज़ में सहमति जताई।

वीर ने दादा जी की रूम में झांका और फिर ज़ोया से कहा, "ज़ो, दो मिनट में मैं तुझे वीडियो कॉल करूँगा। लेकिन, बि केयरफुल। तू कुछ बोलेगी नहीं, ओ.के?"

ज़ोया कुछ जवाब दे उससे पहले ही वीर ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया और ज़ोया को वीडियो कॉल किया।

"शश..." कैमरा में वीर ने एक उँगली मुँह पर रखकर ज़ोया से चुप रहने का इशारा किया और फिर फोन के कैमरे का ऐंगल घुमाया। ज़ोया ने देखा कि दादा जी फोन पर किसी के साथ बातें कर रहे थे।

"जोशी साहब, मेरी ज़ोया ने यंगेस्ट राइटर का अवॉर्ड जीता है,"

"हाँ, हाँ....थैंक्यू। बचपन से ही बहुत होशियार है मेरी बिटिया।" दादा जी की आवाज़ में गर्व छलक रहा था।

दादा जी के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर ज़ोया को बहुत अच्छा लगा।

वीर ने फोन का कैमरा अपनी ओर मोड़ा और हंसकर कहा, "पता नहीं दादा जी अभी तक कितने फोन कर चुके होंगे और उनका लिस्ट और अभी कितना लम्बा होगा! बोल, अब तुझे क्या कहना है?"

"भाई, मैं इस वीकेन्ड में अहमदाबाद आ रही हूँ।" ज़ोया ने उसी पल तय किया।

"ग्रेट।" वीर ने उत्साह में आकर टिकट की वेबसाइट खोली। "जो, फ्राइडे नाइट की दस बजे की फ्लाइट है। २८०० रु. की है और पच्चीस प्रतिशत ऑफ है यानी..."

"२१०० में पड़ेगी।" ज़ोया तुरंत बोली।

"नोट बैड ज़ोया। तेरा मैथ्स अभी भी एकदम पक्का है।" वीर ने शाबासी दी।

"इसीलिए तो मैं कहती हूँ भाई कि हमें स्कूल में हरेक सब्जेक्ट में मेहनत करनी चाहिए। इसी तरह ही ऑल राउन्डर बना जा सकता है।" ज़ोया मज़ाक में बोली। और दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े।

एक ऐसा निवेश

दोपहर का समय था। रेस्टोरेंट बिल्कुल खाली था। कुछ काम नहीं था इसलिए नकुल ने ईयरफोन कान में लगाया और फोन पर म्यूज़िक ऑन किया।

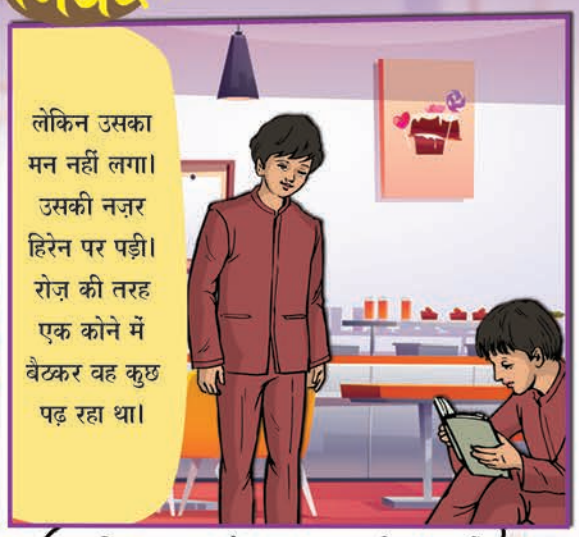

लेकिन उसका मन नहीं लगा। उसकी नज़र हिरेन पर पड़ी। रोज़ की तरह एक कोने में बैठकर वह कुछ पढ़ रहा था।

कितना पढ़ाकू है! इस महाशय की लाइफ़ में फन जैसा कुछ है ही नहीं! चलो आज इससे थोड़ी बातें करता हूँ।

यार, तू तो सारा दिन पढ़ता रहता है! एक तो वेटर की नौकरी करना और टाइम मिले तब किताब खोलकर बैठ जाना! तुझे बोरियत महसूस नहीं होती?

नहीं, बोर होने का समय ही किसके पास है? यदि अभी बोर हो जाऊँगा तो सारी जिंदगी ही बोरियत भरी हो जाएगी!

मतलब?

मतलब यह कि.. वेल, इसका कारण समझने के लिए थोड़ा फ्लैशबैक करना पड़ेगा।

हिरेन ने बीते दिनों के पन्ने खोले...

मैं रौशनपुर नामक एक छोटे से गाँव में पला बढ़ा हूँ। मेरा स्कूल घर से करीब चार कि.मी. दूर था। मैं रोज़ पैदल स्कूल जाता था।

वह दिन मुझे अच्छी तरह याद है। मैं जल्दी घर पहुँच ना चाहता था। उस दिन मैंने अपना नाम लिखना सीखा था!!

माँ यह देखो... आज मास्टर साहब ने मुझे मेरा नाम लिखना सिखाया। मेरी माँ की आँखों में खुशी के आँसू थे।

मुझे पढ़ना-लिखना आ गया इसलिए मैं गाँव का वह बच्चा था, जो सब लोगों की सारी निजी बातें जानता था। मैं बुजुर्गों को उनके पत्र पढ़कर सुनाता था। उनका छोटा-बड़ा काम कर देता था।

जब मुझे कॉलेज में एडमिशन मिला तब पूरे गाँव नें मिलकर उत्सव मनाया था।

उत्सव की रात मुझे अपने माता-पिता की बातचीत सुनाई दे गई।

हिरेन की पढ़ाई के लिए आपने अपना सोना बेच डाला?

धन से सोना ख़रीद सकते हैं। लेकिन धन और सोना लुट सकता है। और उस धन से यदि विद्या प्राप्त हो जाए तो न तो वह कभी कम होती है न ही उसकी चोरी हो सकती है।

बेटा, तू ज़रा भी दुःखी मत होना। तेरी पढ़ाई एक ऐसा निवेश है जिसका फायदा हमें जीवनभर मिलेगा। याद रखना, विद्या एक ऐसा कवच है जो जीवन की सभी कठिनाइयों में तेरा रक्षण करेगी।

दोस्त, मेरे माता-पिता ने मेरे लिए जो निवेश किया है उसका उन्हें फायदा प्राप्त करवाने का मुझे असवर मिला है।

सिर्फ माँ-पिता जी तक ही नहीं, लेकिन मुझे तो पूरे रौशनपुर में अपनी विद्या की रौशनी फैलानी है। तुम ही बताओ, है मेरे पास बोर होने के लिए समय?

लेकिन दोस्त, तुझे देखकर तो ऐसा लगता है कि तू तो एक पढ़े-लिखे परिवार से है। तेरे कपड़े, शूज़ सब नए डिज़ाइन के होते हैं। तू यहाँ रेस्टोरेंट में नौकरी...

सही कह रहा है। मुझे पैसों की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं तो पेरेंट्स के आग्रह से यह जॉब कर रहा हूँ। वे मुझे सिखाना चाहते थे कि पढ़ाई के बिना लाइफ़ कैसी हो सकती है!

हिरेन को पढ़ाई की कितनी वैल्यू समझ में आ गई है। और मुझे? मैं तो मम्मी-डैडी पर नाराज़ हो रहा था कि वे लोग मुझे ज़बरदस्ती नौकरी करवा रहे हैं। हाऊ रोंग वॉज़ आई!

मम्मी-डैडी ने पढ़ाई करने के लिए मुझे जो फैसिलिटीज़ दी हैं उसकी मैं वैल्यू करूँगा। आज से मैं मम्मी-डैडी के आग्रह की वजह से नहीं, बल्कि अपने और उनके ब्राइट फ्यूचर के लिए पढ़ूँगा।

जीवंत उदाहरण

एक दस साल का बच्चा अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिए घर-घर न्यूज़ पेपर बाँटने का काम करता था। उस बच्चे के पिता एक नाविक थे। तामिलनाडु के रामेश्वरम नामक एक छोटे से गाँव में वे दर्शनार्थियों को लाने-ले जाने का काम करते थे।

परिवार की आर्थिक परिस्थिति कमज़ोर थी लेकिन उस बच्चे में नई-नई चीज़े सीखने की जिज्ञासा और पढ़ने का उत्साह बहुत प्रबल था। और अपने इसी अनोखे आदत की वजह से सालों बाद वह बच्चा एक महानुभव बना। उन विलक्षण पुरुष को पद्मभूषण, पद्मविभूषण और भारतरत्न से सम्मानित किया गया। इतना ही नहीं वे भारत के सबसे ज्यादा लोकप्रिय राष्ट्रपति हुए। हाँ, यह बात है, 'मिसाइल-मेन' की तरह पहचाने जाने वाले श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आज़ाद की!

अब्दुल कलाम ने प्राथमिक शिक्षा रामेश्वरम की एलीमेंट्री स्कूल से पूरी की थी। जब वे पाँचवी कक्षा में पढ़ते थे तब उनके विज्ञान के टीचर ने, "पक्षी किस तरह उड़ते हैं" उसके वैज्ञानिक सिद्धांत के बारे में क्लास में समझाए। क्लास खत्म होने के बाद बहुत सारे विद्यार्थियों को वह समझ में नहीं आया था। टीचर ने सभी विद्यार्थियों को शाम के समय समुद्र के किनारे मिलने के लिए कहा। शाम को क्लास के सारे विद्यार्थी समुद्र के किनारे इकट्ठा हुए। टीचर ने आकाश में उड़ते हुए सीगल पक्षी को दिखाया कि वे पक्षी किस तरह उड़ते हैं, हवा में मोड़ लेते हैं, उतरते हैं, वह सब ठीक से समझाया। इस घटना ने अब्दुल कलाम में आकाश में उड़ने के सपनों का बीज बो दिया और अंत में वे 'मिसाइल-मैन' बन गए।

हाईस्कूल के टीचर अयादुरै सोलोमन, अब्दुल कलाम के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक बने। टीचर सोलोमन ने कलाम से कहा था, "जीवन में सफल होने के लिए और मनचाहा उच्च परिणाम पाने के लिए, यदि तुम ऐसा मानकर चलोगे कि तुम जो चाहते हो वह पूर्ण होगा और अवश्य होगा ही, तो सफलता अवश्य मिलेगी ही", इस बात का जीवंत उदाहरण अब्दुल कलाम के जीवन से मिलता है। अब्दुल कलाम जब छोटे थे तब उन्हें समुद्र किनारे उड़ते हुए पक्षियों की उड़ान और आकाश के रहस्यों का बहुत आकर्षण था। कलाम जब सीगल पक्षियों को आकाश में ऊंचा उड़ते देखते तब उन्हें भी उड़ने की तीव्र इच्छा होती। अपने उड़ने के सपनों को बताते हुए कलाम लिखते हैं कि, "भले ही मैं गाँव का सीधा-साधा लड़का था लेकिन मुझे विश्वास

थी कि एक दिन मैं आकाश में उड़ूँगा।" और वास्तव में उन्होंने अपना सपना साकार कर दिखाया।

अडिग आत्मविश्वास से, नया सीखने के लिए हमेशा तत्पर कलाम ने बहुत मेहनत करके हायर सेकंड्री के बाद फिजिक्स में ग्रेजुएशन करने के बाद एरोस्पेस इंजीनियरिंग किया। स्पेस रिसर्च में उन्होंने बहुत निपुणता हासिल की। डिफेंस रिसर्च डेवलपमेंट में काम करने के बाद, उन्हें भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार के पद पर नियुक्त किया गया।

जुलाई २००२ में वे भारत के ११ वें राष्ट्रपति बने और अंतर्राष्ट्रीय स्कूलों और यूनिवर्सिटियों में युवाओं को प्रोत्साहित करने में व्यस्त रहे।

ता. २७ जुलाई, २०१५ के दिन भारत के सबसे प्रिय राजनेता, प्रखर वैज्ञानिक, संत और स्वप्नद्रष्टा, देश के प्रेरक श्री अब्दुल कलाम ने इस धरती से विदाई ली।

श्री अब्दुल कलाम एक शिक्षक थे जो आजीवन विद्यार्थी बनकर रहे। उनके जीवन का एक खास उद्देश्य विद्यार्थियों को संबोधन करके उनमें प्रेरणा की चिंगारी पैदा करना था।

तो चलो मित्रों, एजुकेशन का मूल्य समझकर आप भी अपनी यह अमूल्य स्टूडेंट लाइफ़ सार्थक करें!

श्री ए.पी.जी. अब्दुल कलाम द्वारा युवकों को कही गई कुछ बातें :

- आपका सपना सच हो, इसके लिए पहले आपको सपना देखना होगा। सपने वे नहीं हैं जो आप नींद में देखते हो, सपने वे होते हैं कि जो आपको सोने नहीं देते।
- जीवन में कठिनाइयाँ हमें बरबाद करने नहीं आतीं, बल्कि वे हमारे अंदर छुपी हुई प्रतिभा, सामर्थ्य और शक्ति को बाहर व्यक्त होने में मदद करती हैं।
- आत्मविश्वास और कठोर परिश्रम, निष्फलता नामक बीमारी को मारने के लिए सबसे अच्छा दवाई है। जो आपको एक सफल इंसान बनाती है।
- किसी को हराना बहुत ही आसान है, लेकिन किसी को जीतना बहुत ही मुश्किल होता है।

मीठी यादें

जामनगर मेडीकल कॉलेज में एक भाई को एडमिशन मिला। उस समय जामनगर में सिर्फ़ एक ही महात्मा थे। नीरू माँ ने शिविर के दौरान उन महात्मा को विशेषरूप से बुलाया और बताया कि यह लड़का जामनगर में एडमिशन ले रहा है। हर हफ्ते या पंद्रह दिन में तुम इसे घर बुलाना, खाना खिलाना और उसकी ज़रूरते पूरी करना। उसके बाद, सौराष्ट में कहीं भी नीरू माँ के सत्संग का आयोजन होता तब नीरू माँ उन भाई को जामनगर से जरूर बुलाते और अपने साथ ही रहने की व्यवस्था करते।

इस तरह, पढ़ाई के महत्वपूर्ण दिनों में नीरू माँ की विशेष देखभाल से उन भाई ने बहुत अच्छी तरह अपनी पढ़ाई पूरी करके ऊँचा पद प्राप्त किया।

सालों के बाद वे भाई गोधरा के पास एक हॉस्पिटल में सेवा दे रहे थे। उस समय भी नीरू माँ ने उन भाई के लिए टिफिन की व्यवस्था करवा दी। व्यवस्था ज्यादा दिन तक नहीं चल पाने से, वे खुद ही अपना खाना बनाते। उन दिनों नीरू माँ अमेरिका सत्संग टूर पर थे। अमेरिका से नीरू माँ ने एक आप्तपुत्र से उन भाई के खाने की व्यवस्था के बारे में पूछा। जब आप्तपुत्र ने बताया कि रसोईया को ढूँढ रहे हैं तब नीरू माँ ने आप्तपुत्र से कहा, "यदि पंद्रह दिन में रसोईया नहीं ढूँढ पाओगे तो तुम्हें खुद ही वहाँ रसोई बनाने जाना पड़ेगा!"

ऐसा था नीरू माँ का प्रेम और हूँफ। जिसे देते, उसे तो जीत लेते लेकिन जिसे डाँटते उसे भी जीत लेते!

हम सभी के अंदर एक कोने में कहीं अर्मांडो है तो कहीं कमांडो! नीचे दिए गए प्रसंगों में आपको क्या बनना है - अर्मांडो या कमांडो? ☑

My Creation

1

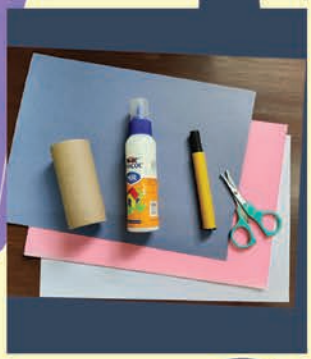

2

3

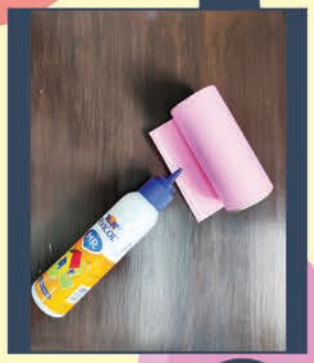

4

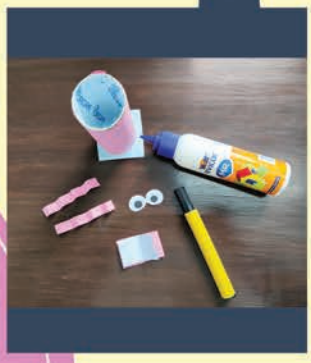

5

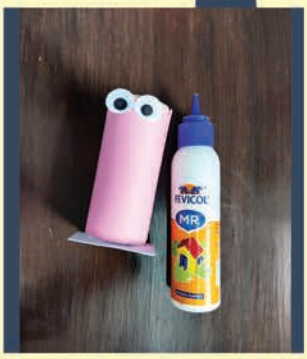

6

7

8

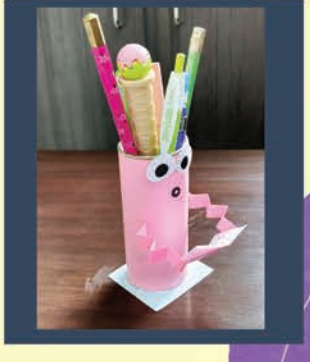

ऐतिहासिक गौरवगाथा

बहुत सालों पहले मगध की राजधानी पाटलीपुत्र पर सत्यव्रत नामक राजा राज्य करते थे। वे न्यायी, स्नेही, सत्यप्रेमी, और पराक्रमी थे। उनके शासन में प्रजा को किसी भी प्रकार का दुःख नहीं था। उसके दरबार में विद्वान और कलाकारों का सम्मान होता था। देश-विदेश के विद्वान और कलाकार राजा के दरबार में शोभायमान थे।

सत्यव्रत राजा के तीन बेटे थे। तीनों कुमार सुंदर और बहादुर थे। लेकिन राजा-रानी के अतिशय लाड प्यार की वजह से वे बिगड़ गए थे। राजा को राजकुमारों के भविष्य की चिंता बहुत सताया करती थी। उन्हें लगता था कि मेरे जाने के बाद यह राज्य कौन संभालेगा? राजा ने राजकुमारों को पढ़ाने के लिए कई विद्वानों को बुलाया, कई आश्रमों में राजकुमारों को भेजा। लेकिन राजकुमार कुछ प्राप्त नहीं कर पाए। वे पढ़ाने वाले विद्वानों को परेशान करके भगा देते थे। राजकुमार प्रजाजनों को भी बहुत परेशान करते थे। राजा के उदार स्वभाव की वजह से प्रजाजन राजकुमारों की परेशानी सहन कर लेते थे। राजा को गुप्तचारों के द्वारा तीनों राजकुमारों की जानकारी मिल जाती थी और उनकी हरकतें जानकर उन्हें बहुत दुःख होता था।

एक दिन राज दरबार में राजा ने अपनी चिंता विद्वानों और पंडितों को बताई। लेकिन राजकुमारों को विद्या देने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। सभी सिर झुकाकर बैठे रहे। किसी में भी राजकुमारों को पढ़ाने की हिम्मत नहीं थी।

यह देखकर राजा निराश हो गए। उन्होंने कहा, "अरेरेरे! मेरे दरबार में कोई भी ऐसा विद्वान नहीं है कि जो मेरे राजकुमारा को विद्या दे सके?"

दरबार के एक कोने में बैठे हुए पंडित विष्णु शर्मा को राजा पर दया आ गई। वे राजकुमारों की हरकतों से परिचित थे। फिर भी राजा के लिए, राज्य के भविष्य के लिए उन्होंने राजकुमारों को गुणवान और विद्यावान बनाने का बीड़ा उठाया।

पंडित विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को विद्या देने के लिए एक शांत स्थल को पसंद किया और राजकुमारों को अपने साथ ले गए। पंडित जी ने राजकुमारों को पढ़ाने के लिए बिठाया। लेकिन राजकुमारों ने तो पंडित विष्णु शर्मा से साफ कह दिया, "हमें पढ़ना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। हमें तो यहाँ घूमने की अनुमति दीजिए।"

"राजकुमारों! मैं आपको पढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं तो आपको तरह-तरह के पशु-पक्षियों की कहानी सुनाने वाला हूँ!"

"कहानी!" पशु पक्षियों की कहानी सुनना तो किसे अच्छा नहीं लगेगा! राजकुमार चौंक गए।

राजकुमार कहानी सुनने के लिए तुरंत तैयार हो गए। पंचतंत्र की शिक्षाप्रद कहानियाँ, पंडित विष्णु शर्मा की ही हैं।

आज, दुनिया की पचास से भी ज्यादा भाषाओं में पंचतंत्र की कहानियाँ पढ़ने मिलती हैं। पंचतंत्र अर्थात् पाँच भागों में बटी हुई। इन कहानियों के एक भाग में दोस्तों के साथ होने वाले मनमुटाव में धीरज रखने का पाठ सिखाया गया है। दूसरे भाग में, दोस्त से जीवन में किस तरह के लाभ हो सकते हैं, उसका संदेश दिया गया है। तीसरे भाग में कौआ और उल्लू जैसे पात्रों के द्वारा स्वार्थी लोगों से बचने की कहानियाँ हैं। चौथे भाग में बंदर और मगरमच्छ की कहानी के द्वारा लालच के कारण हाथ में आई हुई चीज़, हाथ में से जा सकती है, ऐसा संदेश देने वाली कथाएँ हैं। पाँचवे भाग में अंधानुकरण करने वालों की हालत कैसी हो जाती है, उसका संदेश देने वाली कथाएँ हैं।

और इस तरह, पंडित विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को प्रेरणादायी कहानियाँ सुनाकर शिक्षा प्रदान करके विश्वभर के बालसाहित्य में इतिहास रच दिया।

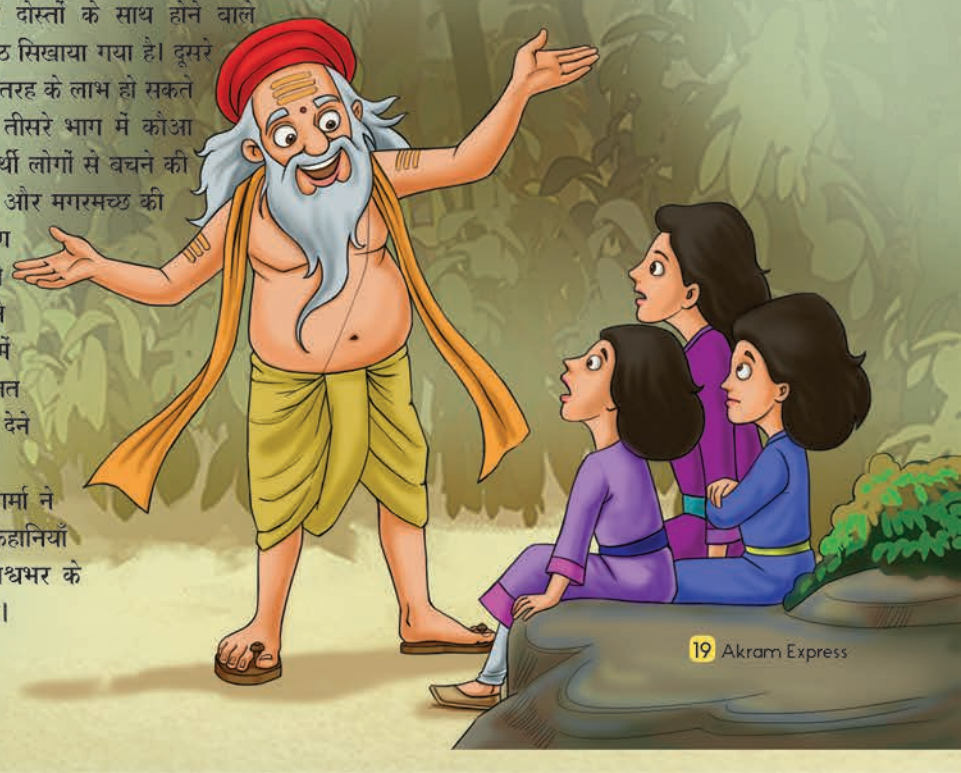

Akram Express

February 2021
Year : 8, Issue : 10
Conti. Issue No.: 95

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dad

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

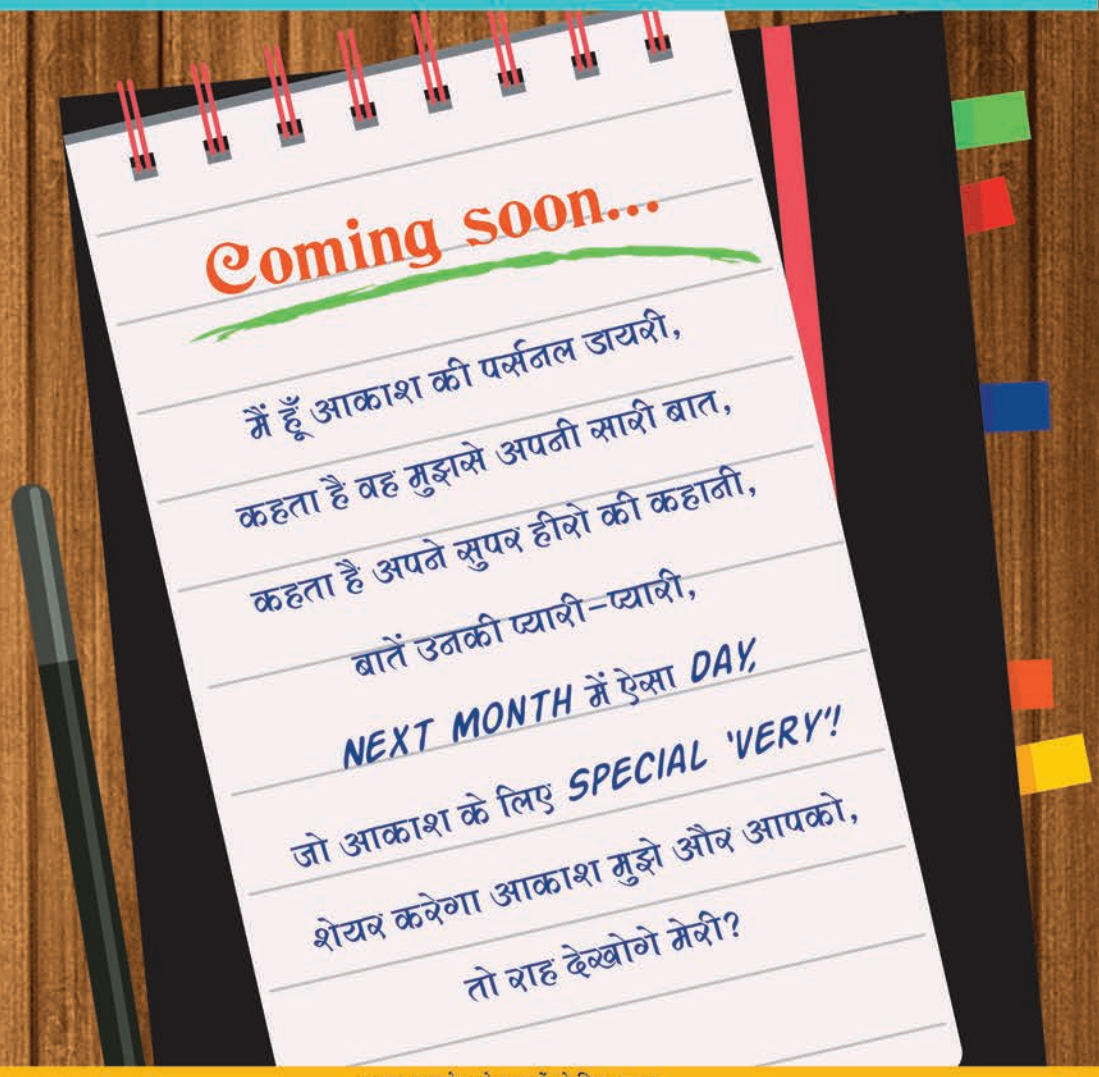

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ९३२८६६११६६/७७ पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025